IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छः वर्ष की अवस्था तक के बच्चों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल के प्रभाव का अध्ययन

Ankshree

Reseaech Scholor

Apex University Jaipur

1. पृष्ठभूमि :–

कार्टून चैनल पर मनोरंजन कार्यक्रमों के साथ–साथ विभिन्न सूचना वर्धक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाते है। कार्टून चैनल के कारण बच्चों की सामाजिकता भी प्रभावित होती है, क्योंकि वे सामाजिक संबंधो का निर्वाह भी उसी तरीके से करते है जिस प्रकार से वे कार्टून चैनलो पर प्रसारित कार्यक्रमों में देखते है। इनसे बालक की भाषा प्रभावित हो रही है तथा बच्चों की षब्दावली में सुधार होता है तथा बच्चों की षब्दावली में सुधार होता है तथा बच्चें नए –नए षब्द, पंक्ति आदि भाषा सीखते है। बच्चें भाषा सीखने के साथ–साथ व्यवहार में परिवर्तन भी करते है। कार्टून चैनल के कारण बच्चे के मूल्यों, भाषा, व्यवहार सभी प्रभावित होते है। भाषा में बालक बोलना–लिखना सीखता है। भाषा द्वारा बच्चें के मौखिक व लिखित रूप की और ध्यान केन्द्रित करता है। बच्चे के बोलने के तरीके से ही उसके भाषा विकास का पता लगाया जा सकता है।

कार्टून चैनल अपने कार्यक्रमों की लोकप्रियता बढाने के लिए हमारी संस्कृति को अन्य रूप में प्रदर्षित कर रहे है जो बालक की भाषा व व्यवहार को प्रभावित करती है कार्टून चैनल पर प्रसारित छोटा भीम, डोरेमोन, रोल नं. 21, किसना, पकडम–पकड़ाई, षिवा, षिनचौन, माइटी राजु, तेनालीराम आदि कार्यक्रमों द्वारा ज्ञानवर्धक सामग्री बच्चों तक पहुँचाई जा रही है। जिससे बालक की भाषा में परिवर्तन आ रहे है तथा बालकों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। 70 प्रतिषत बच्चे रोजाना 2–4 घंटे कार्टून चैनल देखते है इसका मुख्य कारण यही है कि कार्टून चैनल पर अनके कार्यक्रम उनके स्तर के अनुकूल दिखाए जाते है। जिससे प्रभावित होकर वह अपना आचरण, भाषा उनकी तरह करते है। बच्चे डोरेमॉन की तरह हर कार्य को गैजेट के माध्यम से करना पसंद करते है जिससे अनके सभी काम आसान हो जाए। इसी तरह अन्य कार्टून पत्रों की तरह ही वे कार्य करना पसंद करते है जिससे उनके सभी काम आसान हो जाए।

इसी तरह अन्य कार्टून पत्रों की तरह ही वे कार्य करना पसंद करते है उनकी तरह बोलना, जवाब देना आदि करते है।

3. शोध उद्देश्य

अनुसंधानकर्त्री ने अपने शोधकार्य हेतु निम्नलिखित शोध उद्देश्य निर्धारित किए हैं–

1. छः वर्ष की अवस्था तक की लडकियों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल के प्रभाव का अध्ययन।
2. छः वर्ष की अवस्था तक के लडकों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल के प्रभाव का अध्ययन।
3. छः वर्ष की अवस्था तक के लडकें व लडकियों के भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन।

4. शोध परिकल्पनाएँ

1. छः वर्ष की अवस्था तक की लडकियों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल का प्रभाव पडता है।
2. छः वर्ष की अवस्था तक के लडकों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल का प्रभाव पडता है।
3. छः वर्ष की अवस्था तक के लडकों व लडकियों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल के प्रभाव में तुलनात्मक अंतर है।

5. शोध प्रविधियाँ :–

5.1 विधि :–प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

5.2न्यादर्ष :–प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्री द्वारा जयपुर षहर के तीन विद्यालयों के छः वर्ष अवस्था तक के 80 बच्चों का चयन किया जाएगा।

5.3 उपकरणः–

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त षोध के लिये स्वनिर्मित प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है।

5.4 प्रदत्त संचयन :–छः वर्ष की अवस्था तक के बच्चों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल के प्रभाव का अध्ययनसे सम्बनिधत सूचनाओं को एकत्र करने को लिए शोधकर्त्री ने जयपुर शहर में स्थित न्यादर्ष के रूप में चयनित –षहरी व ग्रामीणअभिभावकों से सामन्जस्य स्थापित किया एवं मापनी को भरने का तरीका बताकर अभिभावकों से मापनी को भरवाया।

6. परिकल्पनाओं का सारणीयन :–

क्र.स	आयाम	प्रतिषत	
		लड़कियाँ	लड़के
1.	मुहावरें	55ण्9:	65ण्93:
2.	पर्यायवाची	93ण्12:	91ण्25:
3.	शब्दार्थ	53ण्75:	72ण्5:
4.	सामान्य प्रष्न	62ण्5:	77ण्3:

7. परिणामों की विवेचना :–छः वर्ष की अवस्था तक की लड़किया व लड़कों के भाषा विकास पर कार्टून चैनल का प्रभाव निम्न रूप में पड़ता है। लड़कियों की अपेक्षा लड़के मुहावरों को समझने में ज्यादा सक्षम है।

- लड़कियों व लड़कों में समान अन्तर ही पाया गया पर्यायवाची सीखने में।
- लड़कियों की अपेक्षा लड़के शब्दार्थ को जल्दी समझते है।
- लड़कियों की अपेक्षा लड़के सामान्य प्रष्नों को जल्दी सीखते है।

इसका कारण यह हो सकता है कि दोनों ही एक समान विषय–वस्तु का अधिगम करते है तथा दोनों एक समान वातावरण में रहते है लेकिन सबका अधिगम करना अलग–अलग होता है। कार्टून चैनल देखने पर बच्चों के भाषा पर प्रभाव पड़ता है।

8. शैक्षिक निहितार्थः–

- बालकों का सबसे अधिक समय अपने अभिभावकों के बीच ही गुजरता है और ये ही बालकों के सबसे अधिक नजदीक होते है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वो बालकों की टी.वी. देखने की समय सीमा निर्धारित करे।
- प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर षिक्षक बालकों को ऐसे कार्यक्रम देखने के लिए प्रोत्साहित करे जो विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों को श्रेष्ठ बनाने की दृष्टि से उपयोगी हो। टी.वी. के बहुत से कार्यक्रम जनमत निर्माण के सषक्त साधन है।
- ऐसे कार्यक्रमों के प्रसार की अनुमति न दे जिनमें अष्लीलता, हिंसा, आक्रामकता का अत्यधिक प्रयोग किया गया हो तथा ऐसे चैनल पर प्रतिबन्ध लगाए जो कि इस तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण करते है।

9. संदर्भ सूची

- **कपिल एच. के. (2000)** ''सांख्यिकी के मूल तत्त्व'' आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस
- **कपिल एच. के. (2012)** ''अनुसंधान विधियां'' (व्यवहारात्मक विज्ञानों में) एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
- **सरीन एवं सरीन (2007)**''शैक्षिक अनुसंधान एवं विधियां'', आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर
- **शर्मा आर.ए. (2000)** ''शिक्षा अनुसंधान'' मेरठ, आर. लाल बुक डिपो
- **शर्मा आर.एस. (2005)**''शैक्षिक अनुसंधान'', मेरठ, कमल बुक डिपो